शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2013

सम्पादकीय

ज्ञानाधारित समाज

आज एक नया शब्द चलन में आया है 'ज्ञानाधारित समाज' अथवा नालेज बेस्डसोसायटी। अर्थात जिस देश, जिस समाज के पास ज्ञान होगा, वही आने वाले दिनों में विष्व का नेतृत्व करेगा। ऐसे सपने भी दिखाए जाने लगे हैं कि 2020 में भारत विष्वगुरु का दर्जा हासिल करेगा। यहां 'ज्ञान' शब्द कई प्रश्नों को जन्म देता है। क्या आज से पहले ज्ञान नहीं था ? आज के ज्ञान और पहले के ज्ञान में क्या अंतर है ? ज्ञान की प्राप्ति में व्यवहार शुद्धि का स्थान कहां है ? ज्ञानाधारित समाज का अंतिम लक्ष्य क्या है ? ऐसे प्रष्नों से बहुत भ्रामक स्थिति निर्मित हो जाती है। जैसे एक कहानी है - एक नवयुवक ने एक साधु की कुटिया का द्वार खटखटाया। साधु ने भीतर से पूछा कौन है ? बाहर खड़े नवयुवक ने जवाब दिया - वही जानने तो आया हूं। कम से कम भारत में ज्ञान का आषय वह नहीं रहा है जो आज के दौर में लिया जा रहा है। यहां ज्ञान का अर्थ हमेशा बहुत गहराई लिए हुए रहा है। यह ज्ञान भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति कराने वाला निष्चित ही नहीं रहा है वरन् उसका संबंध आत्म साक्षात्कार से रहा है। इस ज्ञान की प्राप्ति के अनेकानेक उपाया हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों, आगम-निगमों में विस्तार से बताए गए हैं। इन सभी ग्रंथों में कमोबेष आध्यात्मिकता और भौतिकता के समन्वय की बात कही गई है। स्वावलंबन और संयमपूर्ण जीवन इन ग्रंथों का मूलमंत्र है। एक तरह से वही ज्ञान की कुंजी भी है।

आज पता नहीं किस ज्ञान की वकालत की जा रही है। आज का ज्ञान बाजारोन्मुख है। यह बाजार की शक्ति का कमाल है, जिसने 'ज्ञान' शब्द को हम सभी के सामने एक नये अर्थ में परोसा है। बाजार प्रतिस्पर्धा के रथ पर सवार है और ईर्ष्या, द्वेष, मत्सर जैसे घोड़े उसे लेकर सरपट भागे चले जा रहे हैं। किन साधनों से साध्य की प्राप्ति की है, आज यह गौण हो चला है और यही आज का 'ज्ञान' है। साध्य और साधन की पवित्रता का बाजार के 'ज्ञान' शब्द में कोई स्थान नहीं है। बाजार के ज्ञान के प्रकाष से आज सभी की आंखें चुंधियाई हुई हैं। इस ज्ञान के सामने नैतिकता और अनैतिकता के प्रष्न उठाने वाला बेवकूफ समझा जाता है। असत्य को सत्य का जामा पहनाने वाले सफल माने जाते हैं और बाजार की नजर में वही ज्ञानी है। जब बाजार प्रणाली पर देष की सरकारों का बंधन था, तब तक स्थिति नियंत्रण में थी, लेकिन जैसे ही अर्थव्यवस्था ने मुक्त बाजार में प्रवेष किया सभी क्षेत्रों में अराजक स्थिति पैदा हो गई। आज बाजार के कारण समस्याओं में इजाफा हुआ है और 'ज्ञानीजन' इसी बाजार में समस्याओं का हल भी ढूंढ रहे हैं।

बाज के ज्ञान का सत्य, प्रेम, करुणा से कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि ये बाजार के ज्ञान में फिट नहीं होते। बाजार में गरीबों के लिए कोई जगह नहीं है, उनकी चिंता करने के लिए सरकार है। गरीबों की स्थिति सुधारने की जिम्मेदारी 'ज्ञानियों' की नहीं है। आज के ज्ञानी सिर्फ बाजार

ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2013

के पोषक हैं। पहले बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत और गरीब देषों को बाजार के रूप में देखा। उनके इस 'सद्विचार' को सरकारों ने वैष्विकरण का हवाला देकर संरक्षण दिया। जब देषी पूंजीपतियों ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को दी जा रही रियायतों का विरोध किया तो देष में उनके हितों के संरक्षण के लिए विषेष आर्थिक क्षेत्र बनाए गए, जहां श्रम कानून उस रूप में लागू नहीं होते, जैसे अन्य जगहों पर होते हैं। 'आईटी' सेकटर और 'मैनेजमेंट' के नये 'ज्ञान' ने श्रम के स्वरूप को ही बदल दिया है। जीवन की मूलभूत आवष्यकताओं अन्न, वस्त्र, आवास की पूर्ति करने में ये क्षेत्र असमर्थ हैं, लेकिन सुख-सुविधाओं से यही वर्ग सर्वाधिक लाभान्वित है। ऐसे ज्ञान आधारित समाज का हम क्या करेंगे जो पैसा तो पैदा करता हो, परंतु अन्न नहीं उपजाता हो, जो हमें अंतर्राष्ट्रीय तो बनाता हो, परंतु अपने ही स्वदेषी लोगों की उपेक्षा करना सिखाता हो, समृद्धि तो लाता हो, परंतु शांति नहीं देता, जो हिंसा आधारित समाज का पोषक हो, जिसका सिर्फ स्वार्थपूर्ति से नाता हो, जो मानवता का मुखौटा लगाकर जनता को ठगने आता हो। विष्वगुरु के ज्ञान से वैश्वीकरण के ज्ञान तक का भारत का चित्र उस ताजमहल के समान है, जिसके बाहरी सौंदर्य को देखकर तो हम वाह! कह उठते हैं, परंतु जिसके भीतर बनी कब्रों को देखकर आह! निकल जाती है। अंतिम व्यक्ति की पीड़ा को महसूस कर सर्वोदय समाज बनाने की ओर हम सभी अग्रसर हों। सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

- डॉ. पुष्पेंद्र दुबे